Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 8, April 2012

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 8, April 2012 **वर्ष 16, अंक 8, अप्रैल 2012**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editor / सहायक संपादक
Dwijendra Kumar
द्विजेन्द्र कुमार

Production / उत्पादन
Deepak Jaiswal
दीपक जैसवाल

Illustration / चित्रांकन
Children from Polian Purohitan, Una
पोलिया पुरोहितां, ऊना के बच्चे

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typeset at Deft Creations H-44, Second Floor, South Extension Part- 1 , New Delhi-110049
Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 119, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Contents/सूची

एक चुहिया बन गई लड़की	मनीषा चंदेल	2
सात बहनें	विन्नी शर्मा	5
The Forest Monster	**Neeta Sarkar**	7
Prayu and Lodlu	**Subhi Koundal**	9
साधू बाबा	मनिका चंदेल	12
Farmer Ramgullu	**Sudesh Sharma**	15
होनी–अनहोनी	रेखा देवी	18
The Witch of ...	**Savitri Sharma**	20
टप टप टपक	हर्ष	22
My Grand Ma's Story	**Vasundhara Sharma**	23
पाँच चीनी भाई	सौरभ	26
जैसे को तैसा	मोहिनी शर्मा	28
Favourite Disciple	**Bhawna Devi**	30
Two Brothers	**Manisha Devi**	31

Editorial Address/ **संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070
राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070
E-Mail (ई–मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in
Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**
Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**
कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।
This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.
यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचो को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

Workshop on Himachali Folktales and Kangra Art

National Centre for Children's Literature, a wing of National Book Trust, India organised a two-day Creative Writing & Illustration Workshop at Government Senior Secondary School in a remote village named Polian Purohitan, in Amb Tehsil of Una District in Himachal Pradesh on 26-27 March 2012 in association with Consortium Octet.

The uniqueness of the region is the rich, unpolluted traditional culture and history with one of the oldest post offices in India. The postmen in the British era were the nomadic 'Gaddi' tribe, who delivered letters and packets to resident Britishers in distant upper hills. The 'Kamakhya' temple atop a remote hill, with the manifestation of the goddess was sanctified here by the Vatsayan Rajpurhoits, who are said to have migrated from Nilachal-Garo Hills in Assam by the Himalayan range route some 800 years ago in 1203 B.C.

The objective of the workshop was to bring to fore the latent potential in the children in creative writing and Kangra art of Himachal Pradesh. Shri Monu Kumar and Shri Suresh Kumar, Kangra art illustrators from the Kangra Art Promotion Society introduced and guided the children in the skills of Kangra art painting. Shri Rajnikant Shukla, an author, guided the school children and teachers in creative writing.

Shri Kanshi Ram Bharati, IAS, Deputy Commissioner of Una, inaugurated the workshop and appreciated the National Book Trust and Consortium Octet's effort to promote the latent talent of the village children. He assured the admistration's co-operation in organizing such workshops in future as well.

Even some teachers and residents participated in the workshop.The stories and illustrations developed in the workshop have been published in this issue of your favourite magazine. Ms Nyapi Bomjen, a student of IIMC, Dhenkanal has worked on this issue as part of the editorial team.

एक चुहिया बन गई लड़की

मनीषा चंदेल

एक राजा था। उसकी सात रानियां थीं । उनमें से छह रानियां महल में रहती थीं और एक रानी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। इसलिए उसे महल के बाहर रहना पड़ता था । एक दिन राजा बाजार घूमने जाते हैं और अपनी छह रानियों से पूछते हैं कि उन्हें क्या–क्या चाहिए ? रानियां तरह–तरह की वस्तुएं मंगवाती हैं। लेकिन जब सातवीं रानी से पूछा जाता है तो रानी कहती है कि उसे एक गुड़िया चाहिए। राजा बाजार चला जाता है।

राजा सभी रानियों के द्वारा बतायी गई वस्तुएं खरीद लेते हैं परंतु छोटी रानी के लिए गुड़िया कहीं नहीं मिलती । घर जाते समय रास्ते में राजा ने देखा कि एक कुंए के पास कुछ औरतें और लड़कियां खड़ी हैं और गुड़िया–गुड़िया पुकार रही हैं । राजा अपना रथ वहां रोकने को कहता है और उनसे पूछता है कि गुड़िया किसका नाम है? उनमें से एक लड़की का नाम गुड़िया सुनकर राजा उसे अपने महल में ले जाता है । महल पहुंचकर सभी रानियों के द्वारा मंगवाई गई चीजें राजा उन्हें दे देता है । सभी बहुत खुश होती हैं। छोटी रानी के पास जाकर राजा उसे गुड़िया देता है जिसे देखकर रानी काफी प्रसन्न होती है।

रानी और गुड़िया महल के बाहर एक साथ रहने लगीं । गुड़िया रानी की बहुत सेवा करती और उसका ख्याल रखती थी। एक दिन गुड़िया ने राजा को बताया कि रानी मां बनने वाली है । यह सुनकर राजा बहुत खुश हुआ । राजा रानी को महल में ले आया। महल में सभी को रानी से अच्छा व्यवहार करना पड़ता था । एक दिन रानी ने गुड़िया से पूछा कि तुमने राजा से झूठ क्यों बोला कि मैं मां बनने वाली हूँ । इस पर गुड़िया ने कहा कि अगर वह ऐसा नहीं बोलती तो उनको अपना स्थान कभी नहीं मिलता ।

कुछ दिनों के बाद गुड़िया रानी को एक चुहिया लाकर देती है और राजा से से कहती है कि रानी ने एक लड़की को जन्म दिया है । राजा कहते हैं कि वह अपनी पुत्री को देखना चाहते हैं । गुड़िया और रानी राजा से कहते हैं कि वे अभी उसे नहीं देख सकते। राजा बहुत क्रोधित होते हैं। तभी रानी बोलतीं हैं कि जब वह बड़ी हो जाएगी तब आप उसे देख सकते हैं ।

राजा मान जाते हैं और पुत्री के बड़े होने की प्रतीक्षा करते हैं। कुछ समय बाद राजा रानी से कहते हैं कि अब वह बड़ी

हो गई होगी इसलिए उन्हें अपनी पुत्री से मिलना है ।

इस पर रानी ने जवाब दिया कि जब वह विवाह योग्य हो जाएगी तभी आप उसे देख सकते हैं। वह समय भी आ जाता है जब पुत्री विवाह योग्य हो जाती है। तब रानी कहती है कि जब उसका विवाह होगा तब आप उसे देख सकेंगे हैं। इस तरह रानी राजा को पुत्री से मिलने नहीं देती।

अब विवाह का समय भी आ जाता है। राजा पुत्री से मिलने के लिए काफी उत्सुक था। तभी रानी और गुड़िया एक योजना बनाती हैं कि उस चुहिया को पिंजरे में डालकर अच्छी तरह से ढककर उसकी शादी करवा दिया जाए। उस नौजवान जिससे उसकी शादी होने वाली है, को गुड़िया बता देती है कि जिससे उसकी शादी हो रही है वह एक लड़की नहीं बल्कि एक चुहिया है।

पता चलने के बाद भी वह लड़का शादी के लिए तैयार हो जाता है ।

ससुराल जाने पर उसका पति उसे कमरे में रखकर दरवाजा बंद कर देता है। तभी सभी रिश्तेदार आते हैं और उससे पत्नी से मिलवाने के लिए कहते हैं। पत्नी एक चुहिया थी इसलिए वह सभी से मिलवाने में शर्माता था ।

कुछ समय बाद पति की मां कहती है बेटा तुम्हारी पत्नी को यह चावल साफ करने और काटने हैं । वह कहता है आप चावल मुझे दे दीजिए, मैं उसे दे दूंगा। चुहिया अपनी सहेलियों को बुलाती है और चावल साफ कर देती है । सभी उसकी पत्नी का काम देखकर काफी प्रसन्न होते हैं और कहते हैं कि तुम्हारी पत्नी काफी होशियार है ।

कुछ समय बाद चुहिया के पति के भाई की शादी होने वाली होती है। मां कहती है कि घर में रंग करवाना है। इस पर वह कहता है, ''मां मेरे कमरे में मत जाना । मैं और मेरी पत्नी मिलकर रंग कर लेंगे।'' वह चुहिया की पूंछ पर ब्रुश को बांध देता है जिससे वह पूरे कमरे में रंग कर देती है । सभी उसकी पत्नी की बहुत तारीफ करते हैं क्योंकि रंग बहुत ही सफाई से किया गया था ।

कुछ दिनों बाद लड़का अपने भाई की बारात में चला जाता है और अपनी पत्नी के लिए कमरे में खाना तो रख देता है परंतु पानी रखना भूल जाता है । चुहिया को प्यास लगती है । वह खिड़की से कूदकर पानी पीने जाती है । पूंछ में बंधा ब्रुश झाड़ियों में फंस जाता है । वह जोर–जोर से चिल्लाने लगती है । तभी वहां से कुछ साधुगण गुजर रहे होते हैं । वे उसके पास आते हैं और रोने का कारण पूछते हैं । वे उसे लड़की बना देते हैं ।

वह लड़की अब कहती है, ''मैं तो खिड़की से आई हूं । अब जब मैं एक लड़की बन गई हूं तो वापस कैसे जाऊंगी ?'' साधु कहते हैं– ''ठीक है अभी तुम्हें चुहिया ही रहने देते हैं। कमरे में पहुंचकर तुम लड़की बन जाओगी।''

जब उसका पति शादी से वापस आता है तो कमरा खोलते ही सामने एक लड़की को बैठा हुआ देखता है । लड़का उससे पूछता है, ''तुमने मेरी चुहिया को कहां रखा है ? मुझे मेरी चुहिया चाहिए।'' वह लड़की सारी बात अपने पति को बताती है। वह बहुत खुश होता है । वह सभी से अपनी पत्नी को मिलवाता है ।

फिर वह उसे लेकर उसके मायके जाता है और उसके पिता से उसे मिलवाता है । वह नौजवान सारी बात रानी और गुड़िया को बताता है और वो भी बहुत प्रसन्न होती हैं।

सात बहनें

विन्नी शर्मा

एक गांव में गरीब पति–पत्नी रहते थे। उनकी सात बेटियां थीं । एक दिन पत्नी अपने पति से कहती है कि अगर तुम इन सात बेटियों को कहीं दूर छोड़ आओगे तो मैं तुम्हें इनाम दूंगी । इनाम के लालच में आकर वह अपनी पत्नी को हां कह देता है। वह अपनी सभी बेटियों को लेकर कहीं दूर चला जाता है ।

रिद्धी देवी

दूर जाकर वह एक डंडा जमीन में गाड़ कर अपनी बेटियों से कहता है कि यदि वह डंडा खड़ा रहे तो समझना कि उनका पिता जिंदा है। अगर डंडा गिर जाए तो समझना वह मर गया। थोड़ी देर बाद तेज हवा चली और डंडा गिर गया । बेटियों ने समझा कि उनका पिता मर गया है और वो रोने लगती हैं।

कुछ देर बाद उन लड़कियों को दूर एक रोशनी दिखाई देती है। रोशनी देखकर वे वहां चली जाती हैं। वहां एक राक्षसी रहती थी पर उसने एक औरत का रूप धारण कर रखा था । वह उन लड़कियों को देखकर बहुत प्रसन्न हो जाती है और सोचती है –वाह ! अब तो कई दिनों तक अच्छा भोजन मिलेगा। वह राक्षसी उन लड़कियों से कहती है– मैं तुम्हारी माता की बहन हूं। इस प्रकार मैं तुम्हारी मासी हूं। वे बहनें काफी खुश होती हैं और उस औरत की सारी बातें मानने लगती हैं।

एक दिन उसने छह बहनों को गाय चराने के लिए भेज दिया और एक बहन को अपने पास इसलिए रख लिया कि वो उसके साथ घर के कामों में सहायता करेगी। सभी मान गईं । जैसे ही वो बहनें गाय चराने के लिए गई तो राक्षसी ने सातवीं बहन को खा लिया । जब बाकी बहनें गाय चरा कर वापस आईं और उन्होंने छोटी बहन के बारे में पूछा तो राक्षसी ने कहा कि

उसे तो उसके मामा अपने साथ ले गए । ऐसे करते–करते राक्षसी ने पांच और बहनों को खा लिया।

एक दिन जब आखिरी बहन घर का काम कर रही थी तभी एक चूहा बाहर आया और बोला कि अगर वह उसे आटा देगी तो वह उसे एक बात बताएगा। बहन ने कहा– ''अगर मैंने तुम्हें आँटा दिया तो मेरी मासी मुझे डांटेगी।'' चूहे ने फिर एक बार दुबारा कहा तो बहन मान गई। जब आटा निकालने के लिए उसने ड्रम खोला तो उसने उसमें अपनी बहनों को देखा। चूहे ने कहा– ''यह औरत तुम्हारी मासी नहीं बल्कि एक राक्षसी है जिसने तुम्हारी सारी बहनों को खा लिया है।''

चूहे ने बताया कि राक्षसी को अपने बर्तनों से बहुत प्यार है । ''तुम भागते–भागते एक बर्तन फेंक देना । जब राक्षसी उस बर्तन को उठाकर रखेगी तो तुम दूसरा फेंक देना । ऐसा करते–करते तुम एक पेड़ पर चढ़कर छुप जाना ।''

एक दिन वहां के राजा के दरबारी अपने पशुओं को घास खिलाने के लिए उस वृक्ष के पास गए जहां वह लड़की छुपी हुई थी। तभी दरबारियों ने आवाज सुनी–''ऊपरो बढ़या नीचे ते बढ़या बीच ते कोर कुवारी कन्या कढ़या''। आवाज सुनकर सभी डर गए और राजा के पास गए। राजा ने सारी बात सुनी । जब राजा वहां वृक्ष के पास पहुंचे तो उन्होंने भी वह आवाज सुना। राजा ने दरबारियों से कहा कि जैसा यह वृक्ष–कन्या कहती है वैसा ही करो । दरबारियों ने वैसा ही किया । बीच में से एक बहुत ही सुंदर कन्या निकली। उस राजा को वह कन्या बहुत ही पसंद आई और उससे शादी कर ली।

आखिर में जब कन्या को पता चला कि उन सभी बहनों को उसकी माता ने ही घर से बाहर निकाला था तो उसे बहुत दुख होता है। कुछ दिनों के बाद उसने अपने पिता को अपने घर पर दावत पर बुलाया। जब पिता आए तो उसने उनकी बहुत खातिरदारी की और जाते समय अपनी मां के लिए एक टिफिन में सांप–बिच्छू आदि भर दिए और कहा कि मां से कहना कि वह उसे अकेले में ही खाए । उसके पिता ने जाकर मां को वह टिफिन दे दिया । मां ने भी कमरे का दरवाजा बंद करके अकेले में उस टिफिन को खोला । टिफिन खोलते ही सांप, बिच्छू उसे काटने लगे। इस तरह उसकी पत्नी मर जाती है ।

कन्या जब घर आती है तो अपने पिता को सारी बात बताती है और उन्हें अपने साथ महल में ले जाती है। फिर दोनों खुशी–खुशी रहते हैं ।

The Forest Monster

Neeta Sarkar

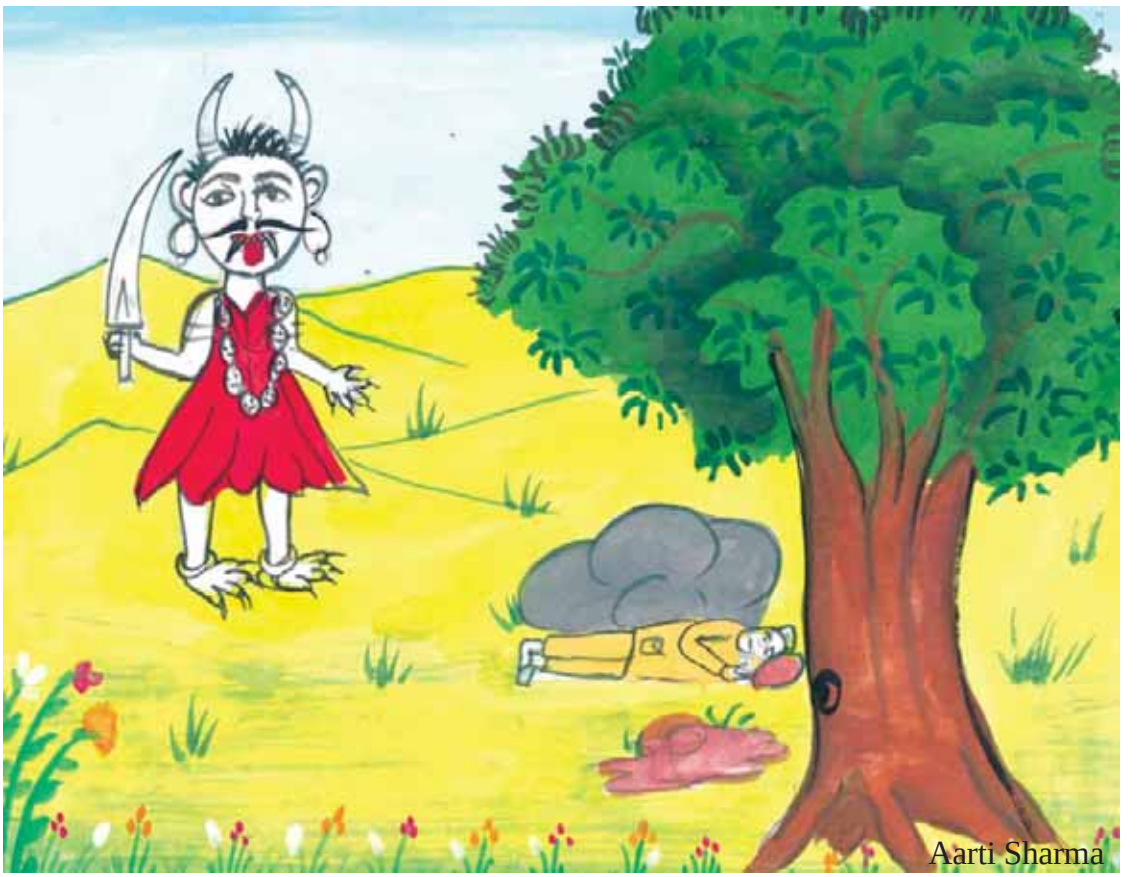

Aarti Sharma

Once upon a time in a remote hill forest village in Himachal, lived an old woman. She was very kind and loved all the animals and birds in the forest. The birds and animals in turn helped the old woman to collect fruits and firewoods. The woman lived alone. She was brave and fearless. She loved to face difficulties and challenges. She went to the forest to collect fruits to eat, and firewoods to cook food and keep her warm in the cold winter month.

In that same forest, there lived a monster, who was cursed by a magician to live in the forest pond forever by casting a magic spell on him, as the monster had annoyed the magician in some way or the other. The spell could be broken only if a fruit was thrown in the pond by a kind old woman.

The mischievous monster had tricked the kind old woman to set himself free. One day, when the old woman came near the pond, the monster moaned pitifully "Help me. I'm hungry and cold in the pond. Just give me one of those fruits you have."

The kind old woman threw a fruit in the pond. The spell was broken and the monster was set free.

The monster now roamed freely in the forest and returned to his old mischiefs. He loved to frighten away anyone who entered the forest. No one dared to enter the forest as they feared the monster, but the kind old woman had never cared about the ungrateful monster.

The monster was extremely puzzled when he tried to frighten her away, but the old woman remained unmoved to the frightening sounds or the mischief of the monster. Though he tried a lot, nothing seemed to work.

"I will irritate and imitate her," thought the ungrateful monster. "She will get fed up and leave the forest."

He was delighted by his plan.

On the next day, when the kind old woman came to collect fruits from the forest, the monster immediately began imitating her actions. When she bent down to collect a fallen fruit from a tree, the monster would do the same. If the old woman sat down to rest, the monster would sit down. The old woman was now annoyed and wanted to get rid of this monster. Then, she planned to trick the monster.

The following day, the kind old woman before coming to the forest, tied a thick bandage on her hand and soaked it in water. She pretended to have injured herself. When she entered the forest, she saw the monster sitting on top of a tree watching her curiously. She pretended to cry in pain. "Oooh... My hand hurts! I can't collect fruits today."

The monster was delighted to see her in pain and wanted to further annoy her. He imitated her-"Oooh..My hand hurts! I can't collect fruits today." The monster was now really enjoying himself.

The old woman called out loudly so that the monster could hear-" I think I'll light a fire to comfort my aching arm." The monster repeated by saying- "I think I'll light a fire to comfort my aching arm."

The old woman then lit a fire and when the fire was ablaze, she put her hand in the fire. The wet bandage did not burn her arm. She was unhurt.

However, the monster, who was quick to imitate her; lit a fire and put his hand in the blazing fire and cried out in pain "Help! Help! I have burnt myself!" The monster ran to the nearby pond and plunged into the water to put the fire out and thus never to return again!

Prayu and Lodlu

Subhi Koundal

Once upon a time, two orphan brothers lived in the hills of Himachal. There was a true bond of brotherly love and friendship between them. Prayu, the elder brother cared for Lodlu, the younger brother. Prayu took all the responsibilities for his younger brother's upbringing and also took care of the farm their father had left behind for his two sons.

Prayu loved his younger brother and hence, felt the need to have a lady to manage all the household work, while they went to the farm. A matrimonial alliance with a girl from a nearby village was arranged. Prayu was married with celebrations. The entire village attended the marriage ceremony and enjoyed the wedding feast.

Prayu was happy, but his newly wedded wife Lilavati, was unhappy because she was greedy. Prayu was always concerned about his brother Lodlu. It annoyed her extremely that the farm, belonged to both of the brothers. In fact, she began to hate Lodlu and looked upon him as a hindrance. She wanted her husband to own the entire farm. She, also, wanted freedom to do whatever she wanted to. So, she began plotting her evil plan to get rid of Lodlu.

Ankita Devi

One day when the two brothers had gone to the farm, a sage with magical powers, paid a visit to their house. Lilavati was alone and respectfully welcomed the sage. She washed the feet of the sage and prepared a good meal for the revered sage. The sage was pleased by Lilavati's devotion and hospitality.

"Desire a boon and I shall grant it to you," the sage proclaimed.

"Most holy saint", she moaned, "I am unhappy because my husband always cares for his younger brother and neglects me. Grant me a boon to break this bond between the two brothers to make me happy."

"You shall have it", said the sage. He took out some herbs from his bag and

gave it to her. "Mix this herb with milk and serve it to the younger brother. He will turn into a dog and you can chase it away from your house. However, I warn you, if he licks or smells sandal wood, the spell will be broken," he instructed. Lilavati was extremely pleased.

The next day, when the two brothers left for the farm, she prepared a potion of milk mixed with the magical herb for Lodlu. She knew Lodlu would come in the afternoon to fetch food for his brother Prayu.

When Lodlu came, the evil woman spoke kindly to Lodlu. "You must be tired and thirsty. Drink this milk. You will be refreshed."

Lodlu, who was unaware of her evil plan gulped down the milk . He was immediately turned into a dog! Poor Lodlu cried out in horror and began to bark. He ran out barking loudly to his elder brother.

Prayu was resting under a tree after the day's work, waiting anxiously for Lodlu to return.

He saw a dog rushing towards him barking loudly. Prayu thought that the dog was attacking him. He raised a stick and started beating the dog to chase it away. Prayu waited for a long time for his brother to return and finally went home. He asked his wife about Lodlu.

"He had come to take the food away. He has also taken all your savings and gone. Such ungrateful person after all the care you took to keep him happy," she replied and began to moan and complain.

Prayu was worried when he did not find his younger brother. He searched everywhere with the dog following him. The dog began to bark trying to tell Prayu about the truth, but the barking annoyed him. He chased the dog away.

Poor Ladlu was left yelping and whining in pain. He ran down the road feeling very miserable. He was very hungry. While he was wandering on the road in search of food, he saw an aged shepherd trying helplessly to get his flock together. Some of his sheep had strayed away.

Lodlu immediately went round barking to help the aged shepherd to collect his flock. The shepherd was pleased and shared his food with Lodlu, now a dog. He had now found a new companion.

The shepherd's young daughter was pleased with the dog. She cared for him because he always helped her to gather the flock whenever she went out with the sheep to graze.

One day, the king of that kingdom was hunting in the forest riding his favourite horse when he noticed the dog gathering the stray sheep flock. He requested the shepherd to give him the

dog. The shepherd obliged and Lodlu, the dog now began to reside in the king's palace. Lodlu, the dog was liked by everyone for his gentle behaviour. Even the beautiful young princess loved the dog. Lodlu lived in the palace for many years.

Rimpi Devi

The king wanted the princess to be married as she was of marriageable age. He sent invitation to the kings from far off kingdoms to attend the traditional 'Swyamvarum' matrimonial ceremony, wherein the princess would select her own husband. Many suitors came to try their luck on the day of 'Swyamvar', and the entire people from the kingdom came to attend the wedding. Lodlu's brother, Prayu and his evil wife, Lilavati had also come to watch the wedding. Lodlu was happy to see his brother among the crowd.

According to the traditional custom, the princess was adorned as a bride with sandal wood paste smeared on her hands. Lodlu, the dog, who was standing patiently near the princess, lovingly licked her hands. The spell was broken and he turned into his original self to the amazement of everyone present.

The princess was taken aback, and the 'Swyamvar' garland fell around Lodlu's neck. According to the custom, he was the bridegroom selected by the princess. He was married to the princess.

Lodlu went to get the king's blessings. He also went to seek his brother's blessing. Prayu was overjoyed to find his lost brother after so many years. Lilavati fell on her knees to ask for forgiveness. Lodlu, who was very kind, forgave her and the entire family lived happily in the kingdom ever after.

Translated by Neeta Sarkar

साधू बाबा

मनिका चंदेल

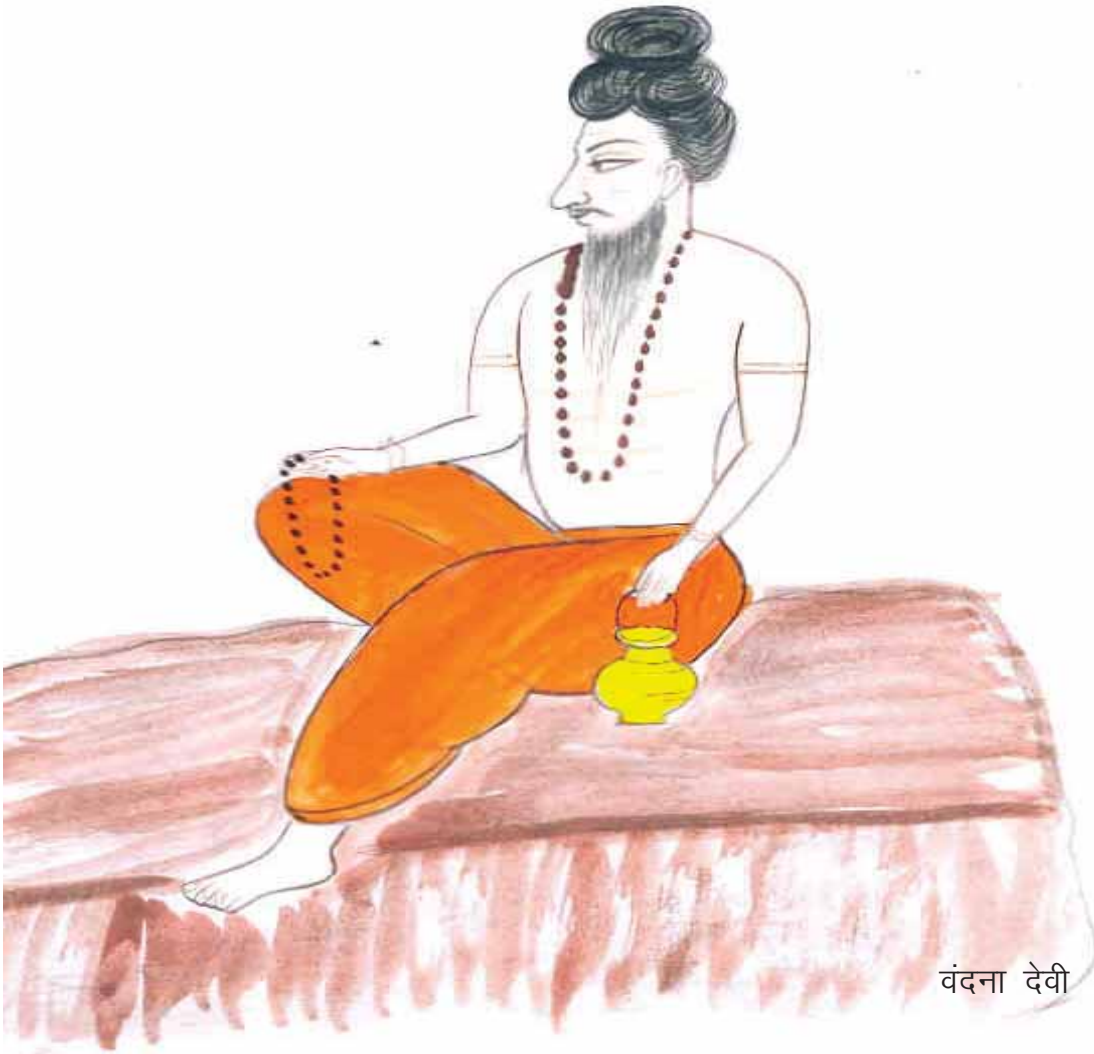

वंदना देवी

पुराने समय की बात है। एक गाँव में चार दोस्त रहते थे। उनके नाम थे– रामू, श्याम, पप्पू और मनोहर। वे चारों बहुत आलसी थे। मेहनत से जी चुराने वाले। हमेशा यह सोचते– हमें कुछ काम न करना पड़े।

एक दिन सुबह के समय चारों एक साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक बुढ़िया मिली जो बीज बेच रही थी। रामू ने पूछा– तुम ये किसके बीज बेच रही हो। बुजुर्ग महिला ने उनकी बात को अनसुना

कर दिया। बुढ़िया ने उन सब को एक–एक बीज दिया। वे अपने बीज वहाँ जमीन पर फेंक देते हैं जिनसे तुरन्त ही बड़े–बड़े ऊँचे पेड़ उग आते हैं।

वे उन पर चढ़कर पहाड़ पर आगे बढ़ते हैं, जहाँ उन्हें एक साधू बाबा मिलते हैं। वे उन्हें प्रणाम करते है। तो बाबा उन्हें बताते हैं कि हमें हमेशा साथ मिल–जुलकर रहना चाहिए। कभी न किसी का हिस्सा खाना चाहिए और न ही रखना चाहिए। लालच बुरी आदत है। चलते समय वे उन चारों को एक छोटा सा फल देते हैं। वे चारों कहते हैं। ये तो बहुत छोटा है। बाबा हँसकर कहते हैं– इसके चार हिस्से करना छोटा टुकड़ा तुममें से हर एक का पेट भर देगा। सुनो मैं तुम्हें और धन दूँगा लेकिन इसके पहले तुम्हें मेरा एक छोटा सा काम करना होगा। मेरी एक रूद्राक्ष की माला पाताल लोक में एक राक्षस के पास है तुम्हें वह मुझे लाकर देनी होगी। चारों राजी हो जाते हैं।

अब वे अपना सफर आगे शुरू करते हैं। आगे चलकर उन्हें सोने का बना हुआ एक मकान दिखाई देता है। वे वहां दौड़कर जाते हैं और कुछ चीजों को उठाने की कोशिश करते हैं। परन्तु वे सभी चीजें जमीन से चिपकी होती है। वे आगे बढ़ जाते है। लेकिन तुरंत एक रेतीले तूफान में फँस जाते हैं।

वहीं रामू के मन में यह विचार आता है कि अगर मैं अपने तीनों साथियों को इस तूफान में फेंक दूँ, तो सोने का सारा मकान मेरा हो जाएगा। तभी तूफान थम जाता है और साधू बाबा की आवाज आती है – रामू तुम्हारे मन में लालच आ चुका है। तुम्हे इसकी सजा मिलेगी। रामू को बहुत पछतावा होता है कि उसके मन में अपने साथियों के बारे में ऐसे विचार क्यों आए। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। रामू जमीन पर गिर जाता है और उसका जीवन समाप्त हो जाता है।

बाकी बचे दोस्त रामू के बारे में सोचते आगे बढ़ते हैं। वहां पहाड़ों में बड़ी–बड़ी गुफाएं होती हैं। तभी श्याम को बड़े जोर से भूख लगती है। वह साधू का दिया हुआ सारा फल खा जाता है। तभी साधू की वाणी सुनाई देती है– हमें किसी का हिस्सा नहीं खाना चाहिए। रामू की स्थिति को याद कर श्याम घबरा जाता है। परन्तु तभी उसका शरीर फूलने लगता है और वह फूलते–फूलते गुफा में फंस जाता है और उसका अंत हो जाता है।

अब पप्पू और मनोहर आगे बढ़ते हैं। वे एक जंगल में पहुंचते हैं। एक गुफा से आती चमक को देखकर उसकी तरफ बढ़ते हैं। गुफा में भरे हीरों की चमक से उनकी आँखे चौंधिया जाती है। वे दोनों हीरों को इकट्ठा करने लगते हैं। मनोहर के मन में

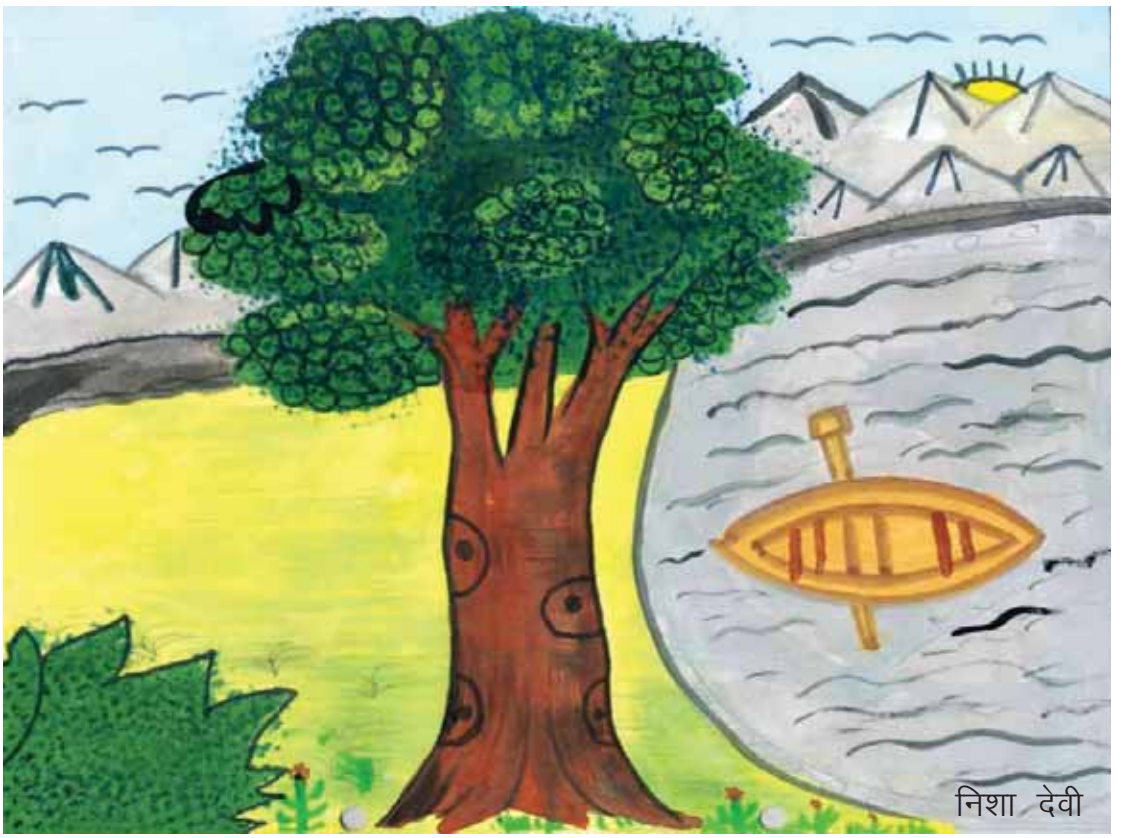

विचार आता है कि अब हम लालच नहीं करेंगे। लालच की वजह से ही हमने अपने दो प्यारे साथियों को खो दिया। अब हम ये हीरे भी छोड़ देंगे। सिर्फ साधू बाबा की माला राक्षस से लाकर उन्हें सौंप देंगे। अभी वह यह सब सोच ही रहा था कि तभी पप्पू उस पर हमला कर देता है। हीरों की चमक से पप्पू के मन में लालच आ चुका था। पप्पू का हाल भी अपने साथियों की तरह ही होता है।

अंत में अकेला मनोहर पाताल लोक पहुंचता है और साहसपूर्वक उस राक्षस से लड़कर साधू बाबा की माला उन्हें दे देता है। साधू बाबा मनोहर से खुश होकर उसे सोने का मकान भेंट कर देते हैं। परन्तु मनोहर उसे लेने से इन्कार कर देता है और कहता है– बाबा मैंने आपकी कृपा से अनुभव करके सीखा है। लालच बहुत बुरी आदत है। इस बिना मेहनत के मिलने वाले सोने के मकान की बजाय मेहनत करके अपने लिए मकान बनाऊंगा। वही मेरे लिए महत्त्वपूर्ण होगा। ऐसा कहकर वह साधू को प्रणाम करके वापस अपने गाँव आ जाता है। मेहनत–मजदूरी कर सुख शांति से जीवन बिताता है।

Farmer Ramgullu

Sudesh Sharma

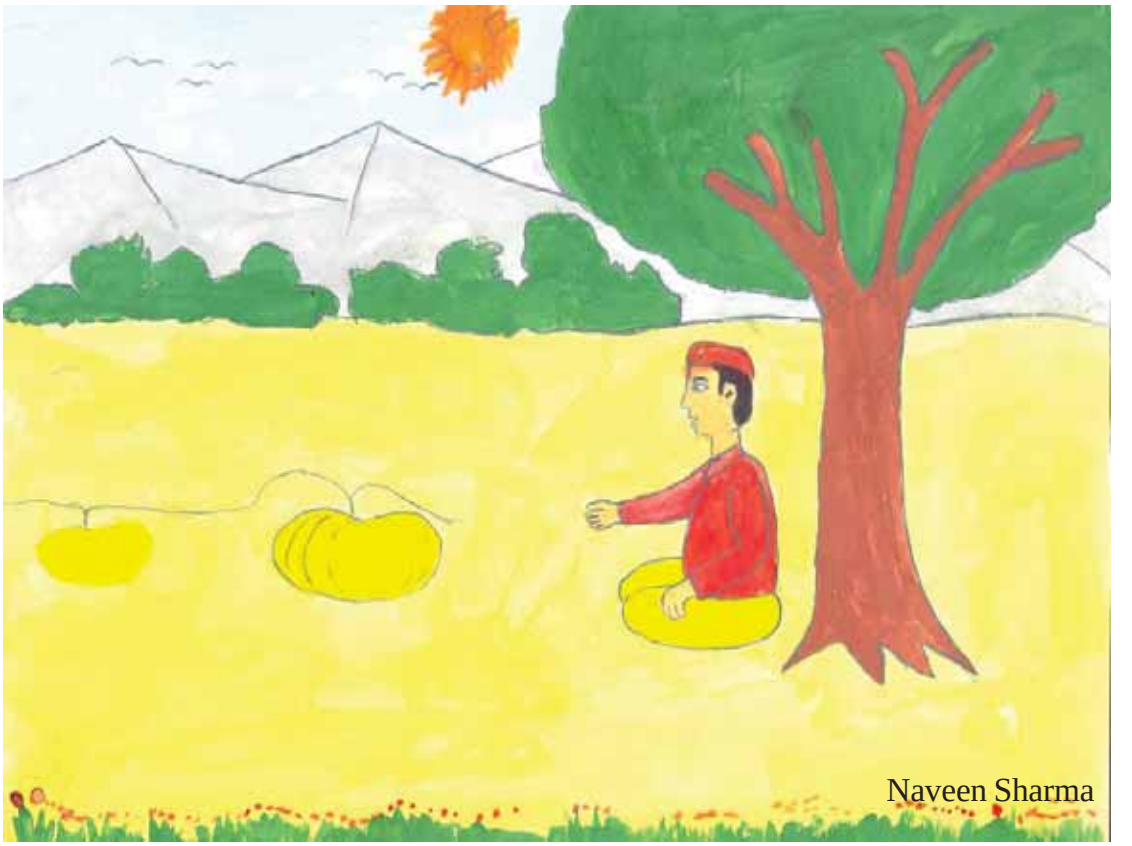

Naveen Sharma

In a village in Himachal, there once lived a happy farmer named Ramgullu. Farmer Ramgullu was very kind and loved everyone. He loved to grow pumpkins. In fact, he was the best farmer in the village who grew large yellow pumpkins. Some were so big that he had to wheel them in a cart to the market. Ramgullu's pumpkins were in demand everywhere- in weddings, in festivals and even in the king's kitchen !

'Look at Ramgullu! He's carrying the biggest pumpkin of the year!' the villagers would say to each other when farmer Ramgullu pushed his huge pumpkin through the village to the market. His pumpkins were famous and sold away at once, while the other farmers sat in the village market all day long.

"Wonder what his secret is?" asked some farmers who envied him. They could never grow a pumpkin that big!

They would talk endlessly about his pumpkins. Some would watch him secretly or find some excuse to see what he did at his farm. They always found him at his pumpkin patch rooting out the weeds or thumping them with love when the pumpkins grew fat.

Ramgullu loved his pumpkins very much and spent most of his time talking to his pumpkins or even playing his flute to them. He always thumped them when they grew a little bigger each day. The pumpkins were so happy that they rejoiced with a short 'blurb' !

"Let's send Totulu to find Ramgullu's secret" said one of the farmers. So Totulu, who lived in the neighbouring farm, was sent one morning to Ramgullu.

"Good day!" greeted Totulu when he saw Ramgullu in the pumpkin patch enjoying his morning breakfast!

Poor Totulu, like other farmers had tried his best to grow pumpkins, but they never grew to more than the size of a small football. He kicked hard at the pumpkins in his anger and the pumpkins refused to grow!

Ramgullu saw Totulu come up to him. He knew that his surly neighbour had come not to pay a courtesy visit, but to find out the secret of his pumpkins.

"Good day Totulu! Nice to see you early this morning," he said merrily, enjoying his breakfast in the pumpkin patch.

"How are your beautiful pumpkins doing? Oh! They look so lovely," he said eyeing the yellow pumpkins that were smiling radiantly in the sunshine. In the next instant, there was a 'blurp' !

"What was that?" he asked, rather surprised at the queer sound from the pumpkin patch.

"The pumpkin is growing. Don't you know they 'blurp' when they are happy?"

"Eh? Is that so?" asked Totulu rather surprised. "I thought they grow when you kick them hard!"

Ramgullu, who by now had finished his breakfast placed his plate in the pumpkin patch. "You are indeed wrong. Just listen quietly while I sing to them to make them happy," said Ramgullu, bending his ear over a huge pumpkin. He began singing a Himachali song to them.

"Why don't you also listen?" suggested Ramgullu.

Therefore, Totulu also bent down to listen.

Sure enough, there was a loud 'blurp' and then another 'blurp'! The entire pumpkin patch was 'blurping' happily. Ramgullu went to each of his pumpkins and thumped them lovingly.

"Oh!" said Totulu rather taken aback. It is true that the pumpkins 'blurp' when they are happy!

Deepak

Totulu rushed back rather excited to the village to inform everyone of his new found secret. "I know how Ramgullu's pumpkins grow so big! They 'blurp' when you sing to them!"

The word soon spread in the village to other farmers who grew pumpkins.

The farmers sat in their pumpkins' patch with plates of food specially cooked of pumpkins. They began singing to them. Sure enough, the pumpkins began to 'blurp' and grow fat! They patted and thumped the pumpkins lovingly. Even Totullu, who was earlier a surly farmer, became happy.

To this day, the farmers in Himachal sit with plates of food in the pumpkin patch and sing to them. Only the farmers in Himachal know the secret of Ramgullu's huge pumpkins.

That was a good thumping story! Wasn't it?

Translated by Neeta Sarkar

होनी–अनहोनी

रेखा देवी

निशा देवी

एक बार की बात है। एक राजा था। राजा को सपना आता है कि उसके महल में अनहोनी होने वाली है। सुबह होते ही राजा ने सभा बुलाई और अपने सपने के बारे में सभी को बताया। सभा ने सारी बात सुनी और राजा से कहा कि आप अनहोनी से कहें कि वह आपका महल, धन, बाग–बगीचे आदि सब कुछ ले ले पर आपकी पत्नी और दो बेटों को कुछ नहीं होना चाहिए । रात को सोते ही राजा को दुबारा सपना आया तो राजा ने अनहोनी से वह सब कुछ कह दिया जो सभा ने कहा था ।

जब राजा सुबह जागा तो देखा कि पूरा महल काला हो गया है । बाग–बगीचे सूख गए हैं । धन भी नहीं बचा । राजा अपने परिवार के साथ वहां से चला गया । चलते–चलते रास्ते में उन्हें भूख लगी । वहीं पर राजा के एक मित्र का घर भी था। राजा अपने परिवार के साथ मित्र के घर चला जाता है ।

राजा के पहुंचने पर मित्र काफी खुश हुआ। उसने सभी को भोजन कराया। जहां पर सभी भोजन कर रहे थे वहीं पर एक मोर की तस्वीर के पास एक मोतियों से जड़ा हार रखा हुआ था । जैसे ही राजा ने

भोजन मुंह में डाला उस मोर ने भी हार अपने मुंह में डाल लिया। फिर, जैसे ही राजा ने अपना भोजन खत्म किया तो मोर ने भी पूरा हार निगल लिया।

राजा ने सोचा कि उसका मित्र कहीं यह न सोचे कि उसने हार चुरा लिया है । लेकिन वह कर भी क्या सकते थे ? राजा अपने परिवार के साथ वहां से चले गए। चलते–चलते वे एक नदी के किनारे पहुंच गए। राजा और उसका परिवार नदी के किनारे विश्राम करने लगा। राजा को सपना आया कि उसके अच्छे दिन आने वाले हैं। नींद खुलते ही राजा अपने परिवार के साथ अपने महल की ओर चल दिया।

रास्ते में दुबारा उसी मित्र के घर राजा और उसके परिवार ने भोजन किया। जैसे ही राजा ने भोजन मुंह में डाला, मोर ने अपने मुंह से हार निकालना शुरू कर दिया। भोजन समाप्त होते–होते पूरा हार बाहर आ गया। राजा ने वह सब देखा और वापस अपने महल की ओर चल दिए।

वहां पहुंचकर उन्होने देखा कि महल पहले जैसा हो गया है, खजाने भर गए है।

Statement on Ownership of the Journal

Readers' Club Bulletin

Form IV

(See Rule 8)

Place of Publication:	New Delhi
Periodicity of Publication:	Monthly
Printers Name:	Satish Kumar
Whether citizen of India:	Yes
Address:	Nehru Bhawan 5 Institutional Area, Phase-II Vasant Kunj, New Delhi-110070
Editor's Name	Manas Ranjan Mahapatra
Whether citizen of India:	Yes
Address:	Nehru Bhawan 5 Institutional Area, Phase-II Vasant Kunj, New Delhi-110070
Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders of more than one per cent of the total capital	National Book Trust, India 5 Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

I, Satish Kumar, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

The Witch of Kinnaur Kingdom

Savitri Sharma

Aarti Sharma

Once upon a time in the kingdom of Kinnaur in Himachal, there ruled a famous and a just king. The loyal subjects of his kingdom were devoted and served the king and the kingdom earnestly. The king also loved his subjects. In fact, the entire royal family helped in the welfare of the state.

The king and the queen decided to hand over the state responsibilities to the young crown prince. They had sent out the matrimonial alliance request for suitable brides to distant kingdoms, but they could not find any beautiful princess worthy to be the queen apparent.

In the nearby kingdom, a witch lived in the hill forest and cast her evil spell on everybody. When she came to know about the king's proclamation to search for a beautiful bride for the crown prince, she changed herself into a beautiful girl.

The learned courtiers and priests assembled to view the proposal. Everyone was unanimous in the choice, although a wise astrologer who was also the royal priest of the kingdom where the witch lived, knew all about the evil plans of the witch through his predictions. He warned the royal court about the dire evil consequences that may befall on the kingdom. He asked them to chant Vedic mantras during the wedding to break the spell and discover the truth. No one paid heed to his warning.

No sooner than the date of marriage was fixed; the evil witch began casting spells of drought in the kingdom. She used magic spell to change the direction

of the monsoon clouds. Rivers, lakes and wells dried up. There was not a drop of water in the entire kingdom. The harvest and cattle began to perish every day.

The wise council met again to discuss the drought situation. The evil witch had not only sent the drought but also sent evil thoughts in the dreams of everyone. It was to offer a sacrifice of the king or the prince to appease the rain gods. She wanted to be the sole queen of the kingdom and the subjects.

The wise astrologer took the queen, the crown prince, the *raj-purohit* and the state minister into confidence. He told them all about the evil witch through his astrological predictions. They finally got together and set up a plan to get rid of the witch. They proclaimed that the marriage would be performed according to the ancient rites. The bride had to prove her purity by sitting on the fire pyre amidst the chanting of Vedic mantras. The evil witch unaware of the plan was to the contrary rejoicing her success and readily agreed to perform the required ancient wedding ritual.

The day of marriage was fixed. The entire kingdom with guests from other kingdoms arrived in the royal wedding. The king, the queen and the royal guests sat to see the wedding ceremony. The crown prince arrived on a white horse decked up as the bridegroom. The witch who had turned herself more beautiful than ever was looked up with awe and admiration by the waiting ladies.

Finally, the auspicious time arrived. The royal priest asked the bride to sit on the platform erected with logs of wood. The witch slowly went like a demure bride and sat on the pyre. The astrologer gave the signal at the appropriate moment. The royal priest lit the holy pyre.

The witch realized to her horror that her magic spell did not work against the Vedic chants of the holy mantra. She ran out of the flame screaming in pain. Her clothes had caught fire and soon she was reduced to ashes. After the riddance of the witch, the kingdom received rains and the drought conditions were over.

Ridhi Devi

टप टप टपक

हर्ष

एक बार जंगल में भारी बारिश हुई । सभी जानवर अपनी–अपनी गुफा में चले गए । अगले दिन जब धूप निकली तब सभी जानवर बाहर आए । बाहर आते ही सभी को टप–टप की आवाज सुनाई दी ।

काफी देर आवाज सुनने के बाद जानवरों ने सोचा कि यह किसी शक्तिशाली जानवर की आवाज है। सभी जानवर भागे और बंदर पेड़ पर चढ़ गए। शेर ने कहा –''मैं किसी से डरता नहीं हूं।'' किन्तु वो भी सभी जानवरों की तरह अपनी गुफा में चला गया।

इस पर चींटी खरगोश से बोली – भाई चलो हम देखते हैं कि आखिर यह टप–टप की आवाज कैसी है ? दोनों यह देखने के लिए चल दिए। चलते–चलते रास्ते में एक तालाब आया। तालाब के पास ही एक पेड़ था जिसकी पत्तियों पर पानी था और एक–एक बूंद तालाब के अंदर टपक रहा था ।

चींटी और खरगोश ने यह बात सभी जानवरों को बताई और दिखाया कि टप–टप टपक की आवाज कहां से आ रही है । यह देखकर सभी हंसने लगे ।

My Grand Ma's Story

Vasundhara Sharma

Simmy Sharma

There is always excitement among people when someone arrives at our village Polian Purohitan , specially when there is festivity in the Kamakhya temple or a wedding.

Our temple is about 800 years old when the 'Devi' was brought to this land of the gods from Nilachal hills by the Vatsayan Rajpurohits and sanctified here.

Many pilgrims visit the temple. I go there every day when our school is over. The entire village visits the temple during 'Navratra' festival.

The excitement today at school was different when our principal informed us that the District Deputy Commissioner was coming to inaugurate our creative writing and illustration workshop being conducted by NBT-National Centre for Childre's Literature from Delhi! Wow!

At first we were all confused, but later our teacher and the resource persons informed us all about it.

Oh! What fun! We would write stories and draw and colour pictures under the guidance of Kangra artists from Dharamshala. NBT editors would correct our stories that would be printed in a magazine. We could not believe it! All my friends were excited, but wondered what storyies we would write?

I ran home to tell my Grandma about this news when the school was over. She is very old with wrinkles on her hands and face. She looks funny when she tries to chew something without her teeth or giggles, but she is loveable and has lots of stories to tell me. I love to hear her telling me about her youthful days:

Long , long years ago when the British Officers with their families came to the Himachal hills in the summer for vacation, there would be excitement in the remote village called 'Dera' in the lower Shivalik hills.'

'The white people are coming!' would be the excited words around. All work in the village would come to a stand still. Kalia ,the blacksmith would stop pumping the leather bellows of his furnace; the woodcutter would drop his axe and rush to the roadside; the women folk would leave their household work to huddle together at the temple courtyard. Villagers would rush out to see the British families ride pompously on horse driven coaches, or sometimes a 'Gora Memsahib' carried in palanquins passed in hushed grunts of the sweating palanquin bearers.'

Somvati, a young eight-year-old Himachali village girl along with her friends would watch in awe at the grandeur of the pageantry. Somvati's father, Omkarnath was a poor man, while her mother Mangla was burdened with the domestic ordeals, from cutting fire wood to fetching water from the rivulet.

The women folk in the village had no rest, except during some moments of excitement when the Goras arrived..The Gora Saheb sometimes hunted a leopard or a sloth bear. The villagers rejoiced as they would get 'Bakshis' for carrying the dead animal slung on a pole with the 'Saheb' leading on a horse. The villagers followed with the children behind. The village dogs too did not want to stay back. They scampered after the retinue barking !

The 'Gora Sahebs' never came back for a long long time.They now come walking with backpacks wandering from one village to another with a camera!

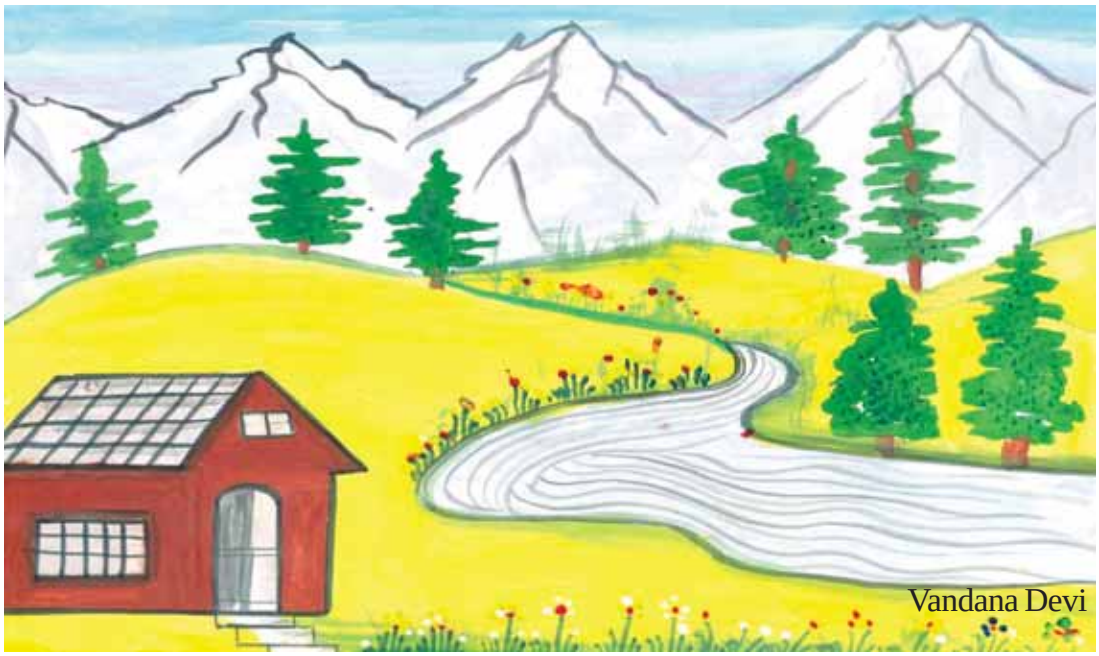

Vandana Devi

Somvati never went to school because there were no schools in the village, nor were there any schools miles around.

Then one day some people from the neighbouring village came. There was to be a marriage in the village. Somvati was to be married off to the nearby village 'Polian Purohitan'. For the next two months everybody was talking of Somvati's'marriage. Finally the big day came. She was married to a simpleton named Khushiya.

Khushiya was a poor farmer with a small patch of land .The harvest crop was enough to last the whole year. Khushiya sometimes worked as a labourer or did odd jobs for the 'Mukiya' when he had nothing to do.

A boy was born to Somvati. It was a day of rejoicing ,specially because a boy was born in the family. He was named Ramanlal. When he grew up, he married a pretty girl named Dayavati from Chamba. They had a pretty girl child after many years.

Today Kushiya is an old man and Somvati ..? She is your Granny!'

'Oh Granny' I said hugging her.'Do tell me about the other girls you had as friend.'

Grandma gave a sigh and said , 'Some other time my pretty little angel!'

Translated by Neeta Sarkar

पाँच चीनी भाई

सौरभ

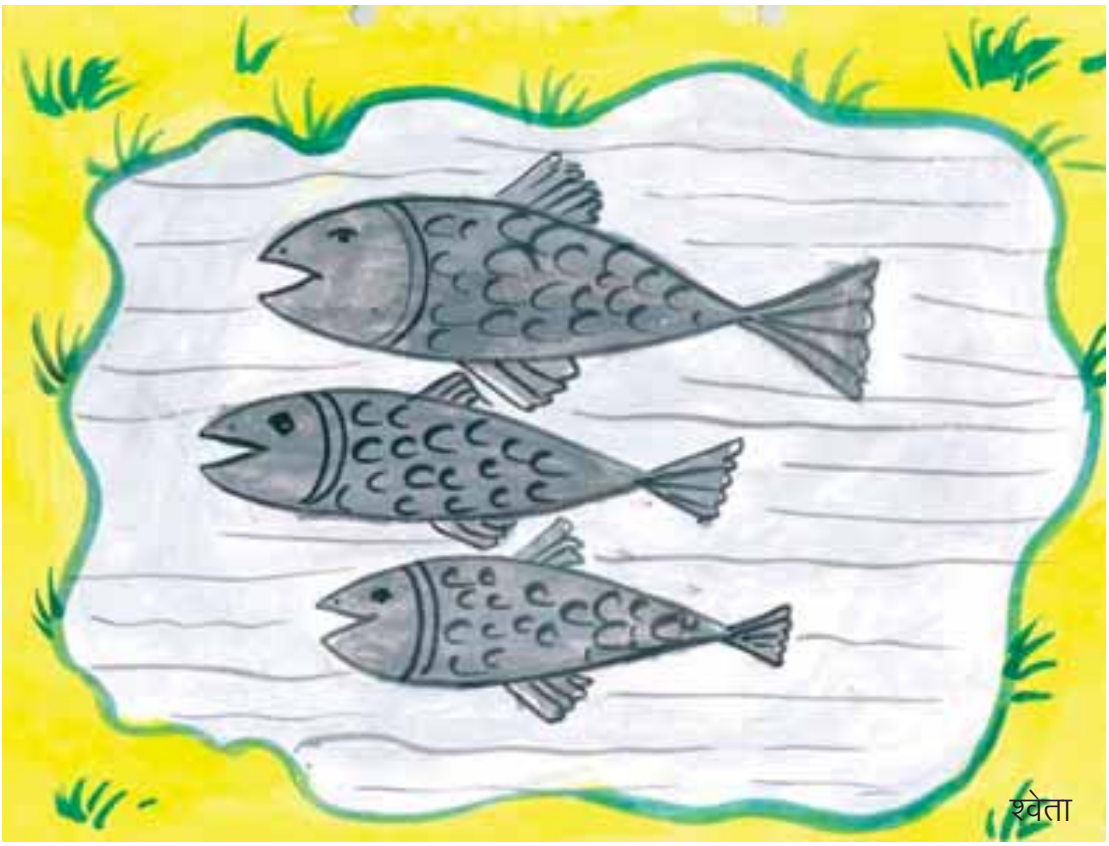

श्वेता

बहुत समय पहले की बात है। चीन देश में पाँच भाई रहते थे। वे पाँचों देखने में बिलकुल एक जैसे लगते थे। उनकी माँ को भी उन्हें पहचाने में भूल हो जाती थी। शरारत करता पहला तो पिट जाता दूसरा या तीसरा। धीरे–धीरे वे बड़े हुए तो उनकी खासियत सामने आयी। उनमें पहला समुद्र को पी जाता था। दूसरा आग में नहीं जलता था। तीसरे की गर्दन लोहे की थी। चौथा जितना चाहे लम्बा हो सकता था, और पाँचवे का दम नहीं घुटता था। इतने सारे अंतर होने पर भी उनमें एक समानता थी कि वे अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे। पहला भाई समुद्र से मछलियाँ पकड़कर उन्हें बेचा करता था।

एक दिन जब वह समुद्र में मछलियाँ पकड़ रहा था तभी वहां एक बच्चा आ गया। वह भी वहीं मछलियां पकड़ने लगा।

जब चीनी भाई ने समुद्र पी लिया तब उसे वह बच्चा दिखाई दिया। उसने इशारा करके बच्चे को वहां से चले जाने को कहा, परन्तु बच्चा नहीं माना। अंत में जब चीनी ने पानी छोड़ा तो बच्चा उसमें बहकर मर गया। बच्चे के घर वालों ने रोकर राजा से फरियाद की। राजा के सिपाही आए और चीनी को पकड़कर ले गए। उसने बहुत सफाई दी, लेकिन राजा ने एक न मानी और उसकी गर्दन काटने की सजा सुना दी। राजा ने कहा– तुम्हारी सजा तय हो गई है, तुम्हारी कोई इच्छा है तो बता दो।

पहले भाई ने कहा– मैं अपनी माँ से बहुत प्यार करता हूं। मरने से पहले अपनी माँ से आखिरी बार मिलना चाहता हूं। राजा ने कहा– आज्ञा है, जाओ अपनी माँ से मिल लो।

वह घर गया। सारी समस्या बताई तो सबने मिलकर एक उपाय सोचा और उसकी जगह पर लोहे की गर्दन वाले भाई को अपने कपड़े पहनाकर भेज दिया। राजा के सिपाहियों ने उसकी गर्दन पर तलवार से वार किया तो उसकी गर्दन नहीं कटी। वह रोता रहा– मैं निर्दोष हूं। राजा के सिपाहियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे दौड़कर राजा के पास गए। उन्हें सब हाल बताया। राजा को विश्वास नहीं हुआ। उसने स्वयं जाकर देखा। तलवार का वार होता लेकिन गर्दन नहीं कटती।

राजा को गुस्सा आया । वह बोला– कोई बात नहीं। इसे आग में जला दो। उसने राजा से फिर विनती कि– महाराज, आप सजा दुबारा दे रहे हैं तो मुझे अपनी माँ से मिलने की इजाजत भी दुबार दी जाए। राजा ने कहा– ठीक है। जाओ जल्दी अपनी माँ से मिलकर आओ। दूसरे भाई ने कहा– हुजूर मैं यूँ गया और यूँ आया।

माँ से मिलने का बहाना था। उसने अपने कपड़े पहनाकर तीसरे भाई को भेज दिया। जो जलता नहीं था। जब वह नहीं जला तो राजा आग बबूला हो गया। उसने उसे समुद्र में डुबाकर मार डालने की सजा दी। उसने फिर अपनी माँ से मिलने की इच्छा प्रकट की और चौथे भाई को भेज दिया। जब उसे डुबोया गया तो वह लंबा हो गया। तब राजा ने उसे गुफा में बंद करने की सजा दी। वह फिर अपनी माँ के पास गया और पाँचवे भाई को भेज दिया जिसका दम नहीं घुटता था। इस तरह अदल–बदल कर पाँचों गए और उनकी मौत नहीं हुई।

राजा घबरा गया। उसने कहा– लगता है तुम निर्दोष हो तभी तुम नहीं मर रहे हो। तुम्हें माफ किया जाता है। वे पाँचों भाई अपनी खासियत के कारण और अपनी आपसी एकता से बच गए। वे सुखपूर्वक अपनी माँ के साथ रहने लगे।

जैसे को तैसा

मोहिनी शर्मा

कहते हैं एक साधू के गले में झूल रहे नाग ने एक बार उनसे प्रार्थना की कि एक ही स्थान पर रहते–रहते वह ऊब गया है, और कुछ दिन शहर में रहना चाहता है। साधू ने कहा– तुम तो बड़े भयंकर हो। बात–बात पर फुफकारते हो। धरती पर जाओगे तो उत्पात मचाओगे। अगर तुम वादा करोगे कि किसी को नहीं काटोगे, तभी मैं तुम्हे जाने दूंगा।

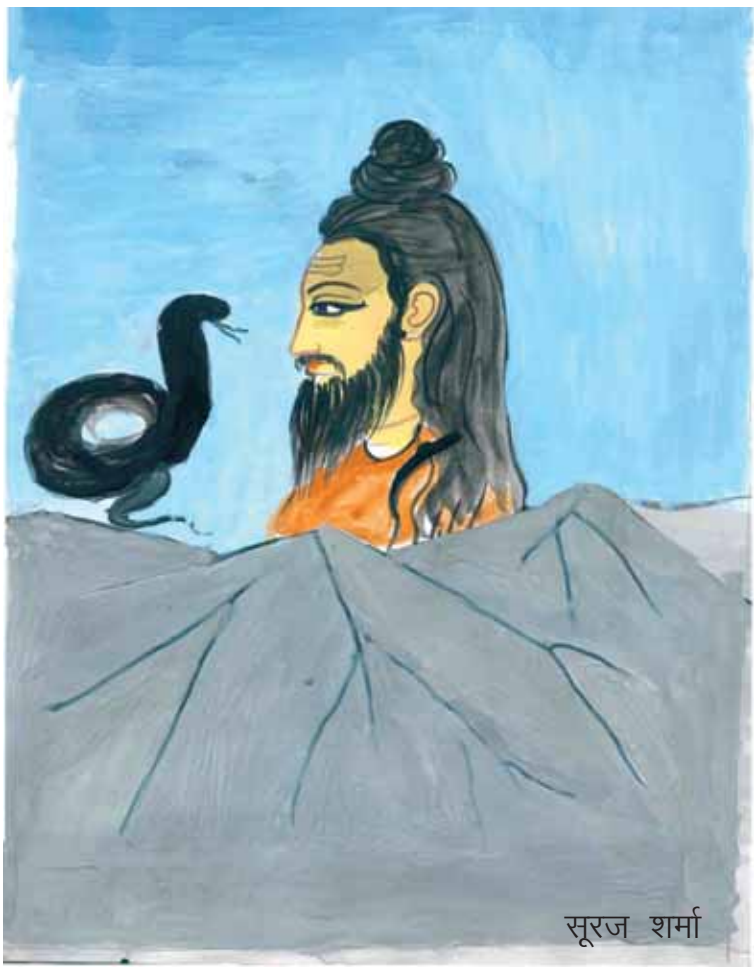

सूरज शर्मा

नाग ने वचन दिया कि मैं किसी को कुछ नहीं कहूंगा, आप जाने तो दें। साधू मन ही मन मुस्कराए और नाग को जाने की अनुमति दे दी। नाग धरती पर आ गया। लोग उसे देखते ही भय से काँप उठते लेकिन वह किसी से कुछ नहीं बोलता। काटना तो दूर की बात रही उसने तो फुफकारना भी बंद कर दिया।

धीरे–धीरे जब लोगों ने उसका यह व्यवहार देखा तो उससे डरना छोड़ दिया। वे उसके पास जाने लगे और उसके साथ सोने लगे। यहां तक कि अब बच्चों ने भी उससे डरना छोड़ दिया। एक बार तो एक व्यक्ति नाग के ऊपर ही सो गया। हद तो

तब हो गयी जब लकड़ियाँ बाँधने के लिए एक बार एक व्यक्ति ने रस्सी की जगह नाग को ऐंठकर बांध दिया। नाग दर्द से बिलबिला उठा, लेकिन वचन से बंधे होने के कारण उसने उस व्यक्ति को कुछ नहीं कहा। बच्चे डंडे से लटका उससे खेलने लगे। वे उसे डंडे पर लटका कर ऊपर उछालते। नाग पेड़ की डालियों पर लटकता सरकता हुआ नीचे गिरता तो बच्चे खूब खुश होते। लेकिन नाग का अंग–अंग पीड़ा से तड़प उठता।

अंत में दुखी होकर एक दिन वह शहर से वापस लौट गया और साधू से बोला– मैं तो बड़े मन से धरती पर गया था, लेकिन मेरा अनुभव अच्छा नहीं रहा। अब मैं जीवन में कभी भी धरती पर वापस नहीं जाऊंगा।

साधू हंसने लगे और बोले– क्या हुआ आखिर मुझे बताओ भी। नाग ने दुखी मन से आप बीती सुना दी। बोला– मैंने आपको जाने से पहले वचन दिया था कि किसी को काटूंगा नहीं। बस उसी वचन से बंधे होने की वजह से मेरी यह दशा हुई है। साधू मुस्कराते हुए बोले– भाई तुमने ना काटने का वचन दिया था फुँफकारने का तो नहीं। कोई तुम्हारे पास आता तो फुँफकार तो मार ही सकते थे। वह क्यों नहीं मारी। तुम्हारी यह दशा इसी कारण हुई है। जाओ एक बार फिर धरती पर जाओ और देखो तुम्हारे साथ लोग क्या व्यवहार करते हैं।

नाग ने मन ही मन कुछ सोचा और एक बार फिर धरती की ओर चल पड़ा। उसे देखकर लोग बहुत खुश हुए। नाग समझ गया कि ये लोग फिर उसे लकड़ियों से बांध देंगे। बच्चों को देखकर वह सहम गया कि वे अभी उछालकर खेलना शुरू कर देंगे। वह डरकर भागने लगा।

तभी उसे याद आया– अरे मैं तो भूल ही गया। मैंने न काटने का वचन दिया था। फुँफकार तो मैं मार सकता हूँ।

अगले दिन जब वह लोगों को दिखाई दिया तो लोग उसकी तरफ लपके। लेकिन तभी नाग ने अपना फन उठाकर एक फुँफकार मारी। यह देखकर लोग घबराकर पीछे हट गए। वे सोचने लगे– इसका कुछ पता नहीं। यह फुँफकार मार रहा है, कहीं काट ही न ले। वे डरकर भाग गए।

जैसे ही बच्चे उससे खेलने के लिए आगे बढ़े, तो नाग ने फुँफकार मारनी शुरू कर दी। बच्चे डर गए, और पीछे हट गए। नाग बहुत खुश हुआ। लोगों का अब उसके प्रति व्यवहार बदल चुका था। वे उसके पास आने से डरने लगे। अब वे उससे दुर्व्यवहार नहीं करते थे। अब नाग को शहर में अच्छा लगने लगा।

Favourite Disciple

Bhawna Devi

Once upon a time in a Gurukul, a Guru liked one of his disciples more than the others. And for this reason, the other disciples were jealous of him. After sometime, the Guru came to know about it and he realised his folly of ignoring other disciples, so he summoned all of his disciples including his favourite one.

On this occasion, the disciples complained to the Guru of being unfair to them. To this, the Guru answered that his favourite disciple was more intelligent and honest than the rest of them. The other disciples objected to their Guru's remark and pleaded that even they were as intelligent and honest like his favourite one.

To test their claims, the Guru asked them, "Which is the best organ of our body?"

The disciples in unison said, "O Guru! The hand is the best organ of our body. For it helps us in working and after studying, we can write with our hands."

Again, the Guru asked, "Which is the worst organ of our body?"

For sometime, the disciples were silent, and said that every organ of our body are of utomst importance.

Then the Guru posed the same question to his favourite disciple.

The disciple replied, "O Guru, the best and worst organs of our body is the same, and that is our vocal chord which help us to speak. In fact, it is what we speak can create a friend or turn friends into foes. If we talk in mellifluous voice and respectfully to others, then it can even turn strangers and enemies into friends."

Hearing his explanation, all the disciples were surprised and enchanted. Pleased with the intelligence and the quick and judicious thinking on part of his favourite disciple, the Guru rewarded him. .

Two Brothers

Manisha Devi

A number of folktales do the rounds across the length and breadth of our country with similar plots, characters and events. These folktales may therefore cannot be ascribed to be of a particular region. This Himachali folktale falls in the same category.

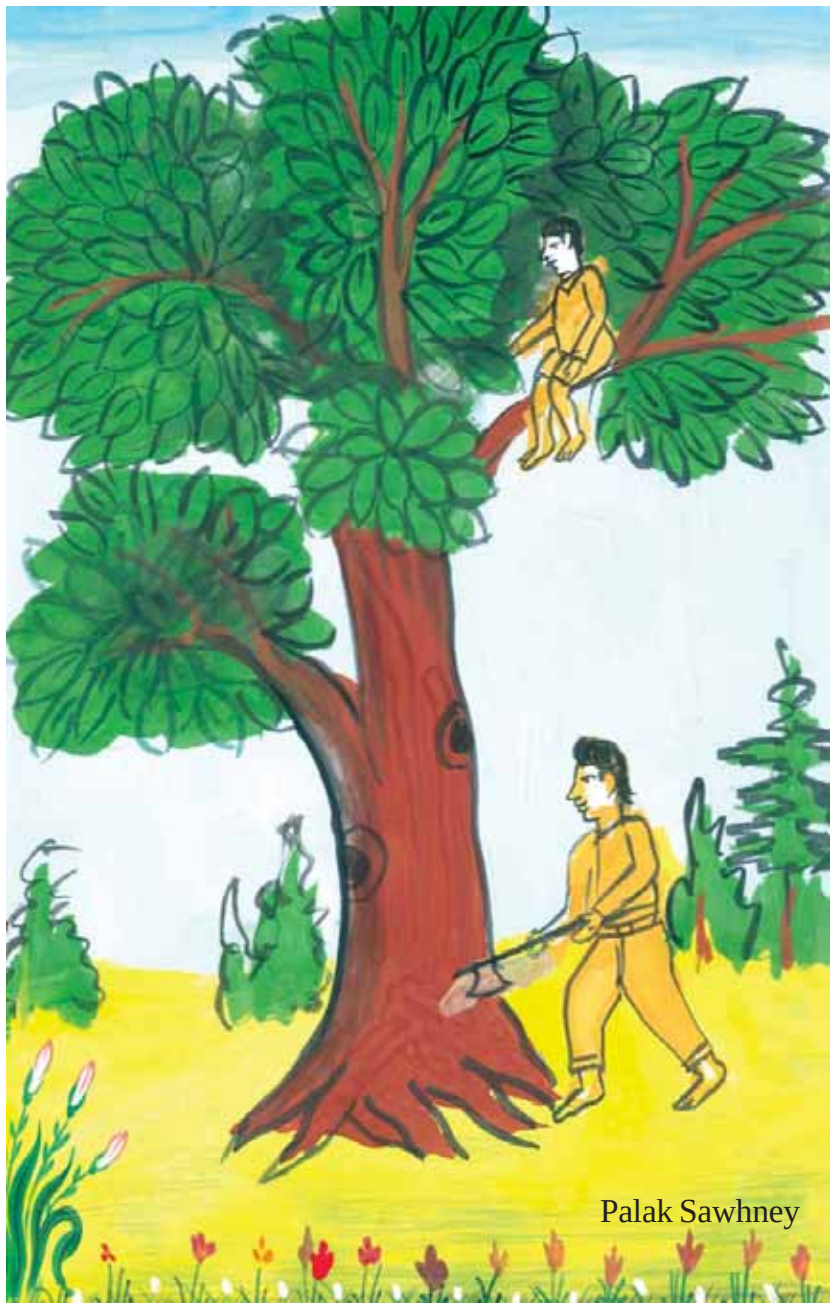

Palak Sawhney

Once upon a time, there lived an old man with his two sons in a hilly region of Himachal. Though poor, he was leading a very happy life as his two sons, obeyed and respected him. But after the old man died, the elder brother had turned selfish and greedy. So, when the time

came for the distribution of the blanket, the apple-tree, the buffalo, the mere possessions of the old man, equally between the two brothers, the elder brother thought of a mischievous scheme.

"I will use the blanket during night while you use it in the morning; I will have the ownership over the back portion of the buffalo, while you take over the front half and I will utilize the upper part of the apple tree and you, the lower," declared the elder brother. The younger who respected his elder brother agreed for the same.

Soon, the younger brother realized that his elder brother had deceived him and made him a big fool. While the elder brother was taking complete advantage of the blanket, buffalo and the apple tree, the younger one was at receiving end. Now the younger brother began to live in utter frustration.

An old neighbour, who was keeping an eye on the turn of events in the family, felt sympathy and got concerned for the younger brother. He told the younger one that he must teach his brother a lesson. The old neighbour's suggestion suited the younger brother and an idea struck him.

Next morning, the younger brother put the blanket in the pond on the pretext of washing it. The wet blanket turned very heavy and useless for the elder brother for a number of nights. When the elder brother came to milk the buffalo, the younger one did not offer fodder to the buffalo but hit it very hard. An angry buffalo started running around and the elder brother could not milk it.

However, the most interesting incident took place when the elder brother was on the apple tree and tasting the ripe apples. The younger brother came with an axe and started cutting the tree. The branch on which the elder brother was sitting fell down and he was severely hurt.

"You are not following what you promised. You are a liar," said the elder brother to the younger. The younger brother, who now could not bear to see his brother in pain, asked for forgiveness but added that justice should be done to him. The elder brother, now began to repent for his selfishness. "I am sorry for what I have done to you. We would together own all the three things and live peacefully," the elder brother made the final declaration. Both the brothers started living happily thereafter.

Book Review

Fly High in the Sky

Priya Sharma

The book 'Fly High in the Sky' starts with the children flying kites on a bright day. A kite fallen from the sky becomes the desirable object among the young boys who want to own it. The boys ran after it as fast as they can. When they get hold of the kite, it gets torn into pieces. Despite the protagonist Meeta's warning, they get on to a fight while trying to grab it and later, blamed each other for tearing it.

Meeta becomes the peacemaker of the fight. Her knowledge about kite making proves fruitful. The boys, Aman, Vivek and Manav make colourful kites under her guidance and are happy about it. They do not have to fight again and can play peacefully together.

Hence, it is a wonderful story about how an individual desire and selfishness can be harmful and a failure in one's life. The story also highlights about the unity and discipline, as Meeta guides the boys to fulfil their individual desires by working together in making their own choice of kites.

The pictures are eye pleasing; the use of simple sentences has made it easier and interesting for the young children to read it with delight.

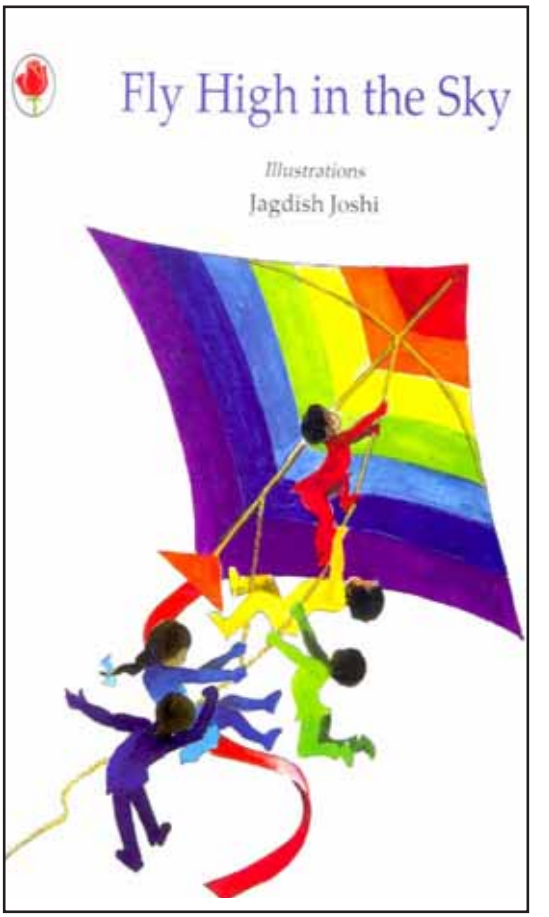

Fly High in the Sky
Jagdish Joshi (Illustrator)
National Book Trust India
Rs. 30/-

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/04/2012

Do you want to be connected with the World of

Children's Literature?

Then, be a member of the Library-cum-Documentation Centre of National Centre for Children's Literature. (NCCL) of National Book Trust, India , and you will get .....

- Children's books in 44 languages
- Reference and lending facility of children's books
- Online access to database of NCCL Library as well as 2034 DELNET member libraries...
- A monthly bi-lingual children's magazine, desk calendar every year, invitations for meetings, fairs and conferences of NCCL (NBT) absolutely free.....
- Lending facility of children's magazines/journals in 18 languages

For details you may .....

- Visit our website www.nbtindia.org.in/innerPage.aspx?aspxerrorpath =/NCCL.aspx,
- Connect to IP No. 59.177.81.15:8000
- E-mail your querries to nccl@nbtindia.org.in
- Call 011-26707712/26121726 between 10.00 a.m. to 5.00 p.m.on all working days.
- Contact during office hours/ write to Librarian-cum-Documentation Officer

National Centre for Children's Literature
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Nehru Bhawan, 5, Institutional Area Phase – II
Vasant Kunj, New Delhi – 110 070